



बढ़ते कदम

वर्ष-16
अंक-11
2017-18



यात्रा वृत्तान्त विशेषांक

भारत के संविधान में राजभाषा

अनुच्छेद 346.

एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा--

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी :

परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध-

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

अध्याय 3 - उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

अनुच्छेद 348. उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा--

(1) इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक--

(क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी,

(ख)) i) संसद् के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,

(ii) संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के, और

(iii) इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

(2) खंड (1) उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा:

परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

(3) खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने, उस विधान-मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349. भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया--

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

—सुधांशु कुमार विश्वास — 3

घुमक्कड़ योद्धा —

— इंद्र ज्योति राय 4

मेरी यात्रा—

— मान सिंह माडी 6

तारापीठ का सफर

— विकास कुमार 7

मानव जीवन की महत्ता..

— गोपाल जी तिवारी 10

अमर नाथ की यात्रा —

— सरस्वती 11

पुरी की यात्रा—

— चंद्रभान 13

चलो गढ़वाल

— अरूण कुमार झा 15

मिठाई का खेल

—उमेश कुमार मोदी 16

बसंत/होरी—

— विनय कुमार झा 18

छाया चित्र

19

चित्र विधिका

20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय

पूर्व रेलवे/मालदा

फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – rajbhasha.malda@gmail.com

Whatsup 7044575977///7319444518

भारत एक यात्रा

भारत एक महान आध्यात्मिक विरासत वाली धरती है और ज्यादातर पश्चिमी देशों के लोगों के लिए एक रहस्य है। इस देश के बारे में दूसरे महाद्वीपों में चाहे कितने ही मिथक और गलत अवधारणाएं क्यों न हों, पर फिर भी लाखों सैलानी हर साल भारत आते हैं।

भारत यात्रा एक अभूतपूर्व और आकर्षक अनुभव सैलानियों के लिए साबित होता है। भारत में कई तरह के व्यंजनों की बड़ी रेंज है और हर एक का अपना मसालों, तेल और जड़ी बूटियों का अनूठा मिश्रण है। सैलानियों को भारतीय व्यंजनों का स्वाद जहां एक ओर लुभाता है, वहीं कुछ यहां की अद्भुत प्राकृतिक छटा भी उन्हें आकर्षित करती है।

भारत के कई प्रमुख हिस्सों में चावल मुख्य भोजन है, वहीं उत्तरी राज्यों में कई तरह की रोटियां खाई जाती हैं। केरल और पश्चिम बंगाल में आप क्षेत्रीय मछली से बने हुए स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद ले सकते हैं। उत्तरी राज्य अपने चटपटे मजेदार अचारों और पशु मांस आधारित व्यंजनों के लिए मशहूर हैं। यहां आप कई प्रकार के मीठे व्यंजनों का भी स्वाद ले सकते हैं जो ज्यादातर पनीर या मसालों से बने होते हैं। भारत में मशहूर जगहों और सामानों को आप कितना भी जान लें, उनका कोई अंत नहीं है।

भारत आने वाले सैलानियों के लिए ताज महल एक बड़ा आकर्षण है और संगमरमर से बने इस विशाल मकबरे को देखने का मौका नहीं खोना चाहते। भारत के अलग अलग भागों में कई लोकप्रिय त्यौहार और मेले आयोजित किए जाते हैं।

राजस्थान के रेगिस्तान में बने विशाल किले भी सैलानियों को बहुत आकर्षित करते हैं। वे इन्हें देख कर सोच में पड़ जाते हैं कि आखिर ये बने कैसे थे। प्रकृति प्रेमी केरल के खूबसूरत बैकवाटर का मजा ले सकते हैं या फिर गोवा के विशाल समुद्र तटों पर धूप का आनंद ले सकते हैं। अजंता एलोरा की अद्भुत प्रेरणादायी मूर्तियां भी बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

हमारा भारत अद्भुत है और यहां की खूबियां किसी का भी मन मोह लेने में सक्षम है। भारत को घूम कर भी कुछ ही जाना जा सकता है। पर घूमने से कुछ तो जाना ही जा सकता है।

— सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक

तनु चंद्रा
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्श

विजय कुमार साहू
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

सुधांशु कुमार विश्वास
राजभाषा अधिकारी(प्रा.)

संपादक

सच्चिदानंद
व. अनुवादक

कार्यकारी संपादक

इंद्र ज्योति राय
क. अनुवादक

सहयोग

कैलाश चंद्र धारियाएवं
दयामय दास

घुमक्कड़ यात्रा

21वीं सदी के इस दौर में जब संचार-क्रान्ति के साधनों ने समग्र विश्व को एक कड़ी में परिवर्तित कर दिया हो एवं इण्टरनेट द्वारा ज्ञान का समूचा संसार क्षण भर में एक क्लिक पर सामने उपलब्ध हो, ऐसे में यह अनुमान लगाना कि कोई व्यक्ति दुर्लभ ग्रन्थों की खोज में हजारों मील दूर पहाड़ों व नदियों के बीच भटकने के बाद, उन ग्रन्थों को खच्चरों पर लादकर अपने देश में लाए, वास्तव में रोमांचक लगता है। पर ऐसे ही थे हिंदी साहित्य के अग्रणी विचारक, साम्यवादी चिंतक, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत, एवं घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के महान साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन।



बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में उन्होंने यात्रा वृत्तांत/यात्रा साहित्य तथा विश्व-दर्शन के क्षेत्र में अभूतपूर्व साहित्यिक योगदान किया। वह हिंदी यात्रा साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। बौद्ध धर्म पर उनका शोध हिंदी साहित्य में युगान्तरकारी माना जाता है, जिसके लिए उन्होंने तिब्बत से लेकर श्रीलंका तक भ्रमण किया था।

सांकृत्यायन जी वास्तव के ज्ञान के गहरे असंतोष में थे, इसी असंतोष को पूरा करने के लिए वे हमेशा तत्पर रहे। हिंदी साहित्य को विपुल लेखन के भण्डार से इन्होंने समृद्ध कर दिया। राहुल जी की प्रतिभा बहुमुखी थी और वे संपन्न विचारक थे। धर्म, दर्शन, लोकसाहित्य, यात्रा साहित्य, इतिहास, राजनीति, जीवनी, कोष, प्राचीन ग्रंथों का संपादन कर उन्होंने विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया। उनकी रचनाओं में प्राचीन के प्रति आस्था, इतिहास के प्रति गौरव और वर्तमान के प्रति सधी हुई दृष्टि का समन्वय देखने को मिलता है। इन्होंने प्राचीन और वर्तमान भारतीय साहित्य चिंतन को पूर्ण रूप से मौलिक दृष्टि देने का प्रयास किया। इनके द्वारा रचित उपन्यास और कहानियाँ बिल्कुल नए दृष्टिकोण को सामने रखती हैं।

राहुल सांकृत्यायन सदैव घुमक्कड़ ही रहे। सन् 1923 से उनकी विदेश यात्राओं का सिलसिला शुरू हुआ तो फिर इसका अंत उनके जीवन के साथ ही हुआ। ज्ञानार्जन के उद्देश्य से प्रेरित उनकी इन यात्राओं में श्रीलंका, तिब्बत, जापान और रूस की यात्राएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। वे चार बार तिब्बत पहुँचे। वहाँ लम्बे समय तक रहे और भारत की उस विरासत का उद्धार किया जो हमारे लिए अज्ञात, अलभ्य और विस्मृत हो चुकी थी। अध्ययन और अनुसंधान की ढेर सारी सामग्री लेकर वे अपनी विदेश यात्रा से लौटे, जिसके कारण हिंदी भाषा एवं साहित्य की इतिहास संबंधी कई पूर्व निर्धारित मान्यताओं एवं निष्कर्षों में परिवर्तन होना अनिवार्य हो गया उसके साथ ही शोध एवं अध्ययन के नए क्षितिज खुले।

अपने तिब्बत और चीन के यात्रा काल में इन्होंने हजारों ग्रंथों का उद्धार किया और उनके सम्पादन और प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त किया। यात्रा साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण लेखक के रूप में हिंदी साहित्य में इनकी पहचान है। इनके यात्रा वृत्तांत में जगह विशेष की प्राकृतिक सम्पदा, उसका आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन और इतिहास अन्वेषण का तत्व समाहित होता है। "किन्नर देश की ओर", "कुमाऊ", "दार्जिलिंग परिचय" तथा "यात्रा के पन्ने" उनके ऐसे ही ग्रन्थ हैं। राहुल सांकृत्यायन का योगदान यात्रा साहित्य में अद्वितीय व अग्रणी है। उन्होंने भारत ही नहीं भारत के आस-पास वह अन्य देशों में भी भ्रमण किया। उनकी यह यात्रा कई बार जानलेवा भी साबित हुई, किंतु वह उससे बच गए। वह

दुर्गम घाटी, दर्रा, पहाड़ी, पठार आदि पर भी यात्रा करने से नहीं हिचकिचाते थे। उनकी रचना – ” मेरी तिब्बत यात्रा ” , ” मेरी लद्दाख यात्रा ” , ” किन्नर देश में ” , ” रूस में पच्चीस मास ” , ” तिब्बत में सवा वर्ष ” , ” मेरी यूरोप यात्रा ” प्रसिद्ध है।

राहुल सांकृत्यायन का मानना था कि घुमक्कड़ी मानव-मन की मुक्ति का साधन होने के साथ-साथ अपने क्षितिज विस्तार का भी साधन है। राहुल ने अपनी यात्रा के अनुभवों को आत्मसात् करते हुए ‘घुमक्कड़ शास्त्र’ भी रचा। वे एक ऐसे घुमक्कड़ थे जो सच्चे ज्ञान की तलाश में थे। भारत के संदर्भ में उनके इस कार्य को किसी द्वेनसांग या फाह्यान से कम नहीं आँका जा सकता। राष्ट्र के लिए एक राष्ट्र भाषा के वे प्रबल हिमायती थे। बिना भाषा के राष्ट्र गूँगा है, ऐसा उनका मानना था। वे राष्ट्रभाषा तथा जनपदीय भाषाओं के विकास व उन्नति के पक्षधर थे। घुमक्कड़ी स्वभाव वाले सांकृत्यायन जी की ऐसी प्रतिभाशाली थे, जिनकी साहित्य, इतिहास, दर्शन संस्कृति सभी पर समान पकड़ थी।

विलक्षण व्यक्तित्व के अद्भुत मनीषी, चिन्तक, दार्शनिक, साहित्यकार, लेखक, कर्मयोगी और सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत रूप में राहुल ने जिन्दगी के सभी पक्षों को जिया। यही कारण है कि उनकी रचनाधर्मिता शुद्ध कलावादी साहित्य नहीं है, वरन् वह समाज, सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, विज्ञान, धर्म, दर्शन इत्यादि से अनुप्राणित है जो रूढ़ धारणाओं पर कुठाराघात करती है तथा जीवन-सापेक्ष बनकर समाज की प्रगतिशील शक्तियों को संगठित कर संघर्ष एवं गतिशीलता की राह दिखाती है।



ऐसे मनीषी को अपने जीवन के अंतिम दिनों में ‘स्मृति लोप’ जैसी अवस्था से गुजरना पड़ा एवं इलाज हेतु उन्हें मास्को भी ले जाया गया। पर घुमक्कड़ी को कौन बाँध पाया है, सो अप्रैल 1963 में वे पुनः मास्को से दिल्ली आ गए और।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अज्ञेय व उनके द्वारा बनाया गया ” तार सप्तक ” के कवियों ने हिंदी साहित्य को कई प्रकार के बंधनों से मुक्त कर उन्हें नया आयाम वह दिशा दिखाया। साहित्य के क्षेत्र में लोगों को आकर्षित किया। अज्ञेय ने ‘ यात्रा वृत्तांत ‘ के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया उनका मानना था कि- “यायावर को भटकते हुए चालीस बरस हो गए, किंतु इस बीच न तो वह अपने पैरों तले घास जमने दे सका है, न ठाठ जमा सका है, न क्षितिज को कुछ निकट ला सका है... उसके तारे छूने की तो बात ही क्या...यायावर न समझा है कि देवता भी जहां मंदिर में रूके कि शिला हो गए, और प्राण संचार की पहली शर्त है कि गति:गति: गति।”

उनके द्वारा रचित – ”अरे यायावर रहेगा याद “ (1953) , “एक बूंद सहसा उछली ” (1964) चित्रात्मक व वर्णात्मक शैली में प्रस्तुत कर यात्रा साहित्य को नया आयाम दिया। वर्ष 1958 में इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1963 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

14 अप्रैल 1963 को सत्तर वर्ष की आयु में दार्जिलिंग में सन्यास से साम्यवाद तक का उनका सफर पूरा हो गया पर उनका जीवन दर्शन और घुमक्कड़ी स्वभाव आज भी हमारे बीच जीवित है।

मेरी यात्रा

मैं दोस्तों के साथ आगामी 6 जनवरी को परीक्षा खत्म होने का इंतजार कर रहा था। दोस्तों के साथ कहीं घूम लिया जाए, ऐसा विचार मन में उमड़ रहा था। हम दोस्तों ने तय किया कि ऐसी जगह चले चलते हैं जहाँ बर्फ देखने को मिल जाए। खूबसूरत वादियां हो, जहाँ हम सब प्रकृति प्यार में पड़कर कुछ समय के लिए उसी में खो जाए। बहुत बड़ी पहाड़ी हो। जहाँ नदियां पास से होकर बहती हो।

इस प्रकार शिमला जाना तय कर लिया गया। किसी ने कहा - नहीं डलहौजी चल लिया जाए। दूसरे ने राय दिया - धर्मशाला। आखिर डलहौजी, धर्मशाला और खासकर मैक डोनाल्डगंज जाने पर हम आठ दोस्तों की सहमति बन गयी। जैसे जैसे समय पास आता गया, साथ घूमने जाने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन घटती चली गयी। 9 तारीख यात्रा पर जाने से पहले अब साथ चलने वाले घुम्मकड़ों यानी दोस्तों की संख्या मात्र 5 ही बची थी।



7 तारीख को ही मनाली जाने का प्लान बना है। ड्राइवर गाड़ी लेकर सायं 7 बजे के आसपास मेरे आवास पर आकर खड़ी हो गई। कुल 5 लोग प्रस्थान किए। जय हनुमान, जय भोले जैसे जयकारों के साथ हमारी गाड़ी आगे बढ़ने लगी।

दिल्ली को पीछे छोड़ते हुए आगे हरियाणा में जाकर एक बार हम सभी रुके। पार्टी के मूड में सभी सामान खरीदते हुए, कोल्ड ड्रिंक्स, उसका चखना अर्थात चिप्स के साथ खाते पीते हुए आगे बढ़ते हैं। अब कार करनाल रोड पर रुकती है, हम सभी उतरते हैं फोटोग्राफी करते हैं। मेरे मित्र जयदीप, आकाश और देव के अतिरिक्त अपने अब खास मित्र ड्राइवर रिकू, से अब बातों ही बातों में बहुत अच्छी दोस्ती हो जाती है।

सभी 6 लोगों में कोई भी एक दूसरे के लिए अनजान नहीं रहा। रात्रि का खाना खाकर हम लोग सभी आराम से कार में बैठ जाते हैं। गाड़ी टोल टैक्स से होकर गुजरती है, रात्रि के 9 बज चुके होते हैं। टोल बूथ पर पुलिस ने हमारी गाड़ी को रोक कर पूछताछ की और हमलोगों का परिचय पत्र मांगा। मैंने अपना आईकार्ड दिखाया, जिसे देखकर पुलिस वाले ने मुझे जोर से डांटा और लगभग धौं स जमाने वाले अंदाज में मुझसे बोला - बाहर निकलो। यह सुनकर मेरी तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। मन आशंकाओं से भर गया। पुलिस वाले ने कहा- यह आईकार्ड किसका है ? मैंने कहा- जी मेरा। पुलिस वाले ने मेरे आईकार्ड को मुझे दिखाकर कहा-यह देख किसका है ? मैंने देखा तो मेरी आंखे फटी की फटी रह गई। मैंने हड़बड़ी में अपने पिताजी का कार्ड बैग में रख लिया था। यह सुनकर मेरे सारे दोस्त मुझपर हंसने लगे। इतने में टोल वाला पैसे लेते हुए हमारी गाड़ी को आगे जाने का इशारा कर देता है। मेरे दोस्तों ने खींची गई तस्वीरों को फेसबुक पर अपलोड कर दिया और कैप्शन डाला..."मस्तों की टोली मनाली रवाना होते हुए।"

रात भर रुकते हुए, चिप्स खाते हुए, प्रदूषण का धुंआ पीते हुए आगे हरियाणा, चंडीगढ़ होते हुए कोल्ड ड्रिंक्स का आनंद लेते हुए हम सभी आगे पहाड़ों की ओर बढ़ चुके थे। कई मौकों पर गाड़ी रोक कर चेकिंग की गयी परंतु हमारा हमारे उत्साह में कमी नहीं हुई। रात गहरा रही थी और हमारी गाड़ी पहाड़ों की ओर प्रस्थान करते हुए सर्पीली राहों पर आगे बढ़ती जा रही थी। कुछ देर में पलके नींद से भारी हो गई और मैं गहरी नींद में सो गया। सपनों में मैं अभी तो मनाली की ओर जा रहा था।

तारापीठ का सफर

मैं अपने परिवार के साथ तारापीठ की यात्रा पर निकला। मालदा हावड़ा इंटरसिटी एक्सप्रेस मालदा में सुबह मिली और उसमें हमलोग सवार हो गए। तारापीठ जाने के लिए हमलोग रामपुर हाट उतरे। वहां से एक आटो रिजर्व किया तथा उस पर सवार हो कर तारापीठ के लिए चल पड़े।

तारापीठ बीरभूम जिले में है इसके नाम पर तारापीठ रेलवे स्टेशन भी बना है। रामपुर हाट निकटतम बड़ा रेलवे स्टेशन है जो यहाँ से लगभग 5-6 किमी दूरी पर स्थित है। रेल मार्ग से मालदा 121 किमी एवं वर्तमान रेलवे स्टेशन 112 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ रुकने के लिए अनेक होटल हैं। रामपुर हाट से मंदिर तक जाने के लिए आटो, और छोटी गाड़ियों की बेहतर सुविधा उपलब्ध है। ये गाड़ियां रामपुर हाट स्टेशन के सामने से ही मिल जाती हैं। इन्हे रिजर्व करके अथवा शेयर में भी जाया जाता है।



मंदिर में दर्शन के दो मार्ग हैं। पहला सामान्य दर्शनार्थियों के लिए जो निःशुल्क है। दूसरा मार्ग उन विशिष्ट लोगों के लिए है जो 200/ रु का प्रवेश टिकिट लेते हैं। उन्हें आविलम्ब दर्शन की सुविधा प्राप्त होती है। मंदिर दोपहर में एक से दो बजे बंद कर दिया जाता है। इस समय माँ को भोग लगाया जाता है।

देवी गर्भगृह में स्थित हैं। गर्भगृह में माँ तारा की जिस मूर्ति को भक्त सामान्य रूप से देखते हैं, वह वास्तव में एक तीन फीट की धातु से निर्मित मूर्ति है जिसे वास्तविक पाषाण प्रतिमा पर सुशोभित किया जाता है। इसे देवी का राजवेश कहा जाता है। मान्यता है कि देवी शिला मूर्ति के रूप में सभी को दर्शन नहीं देना चाहती थीं। अतः उन्होंने एक अन्य आवरण या राजवेश भी उपलब्ध करवाया। यह राजवेश देवी का सौम्य रूप है। देवी के माथे पर लाल कुमकुम की बिंदी है। पुजारी इस कुमकुम / सिंदूर का एक तिलक माँ तारा के आशीर्वाद स्वरूप भक्तों के माथे पर लगाया जाता है।

माँ तारा की मौलिक मूर्ति देवी के रौद्र और क्रोधित रूप को दिखाता है। इसमें माँ तारा को बाल शिव को दूध पिलाते दर्शाया गया है। यह मूर्ति पत्थर की है। देवी के गले में मुंडमाल है। मुख और जिह्वा रक्तंजित है। चार हाथों में विभिन्न हथियार सुशोभित हैं। 4:30 बजे सुबह मंदिर खुलता है तब केवल भाग्यशाली भक्तों को देवी के इस रूप के दर्शन का मौका मिलता है। मंदिर के परिसर में पवित्र **जीवित तालाब** निर्मित है। किवदंती है कि इस ताल में मृत को भी जीवित करने की शक्ति थी।

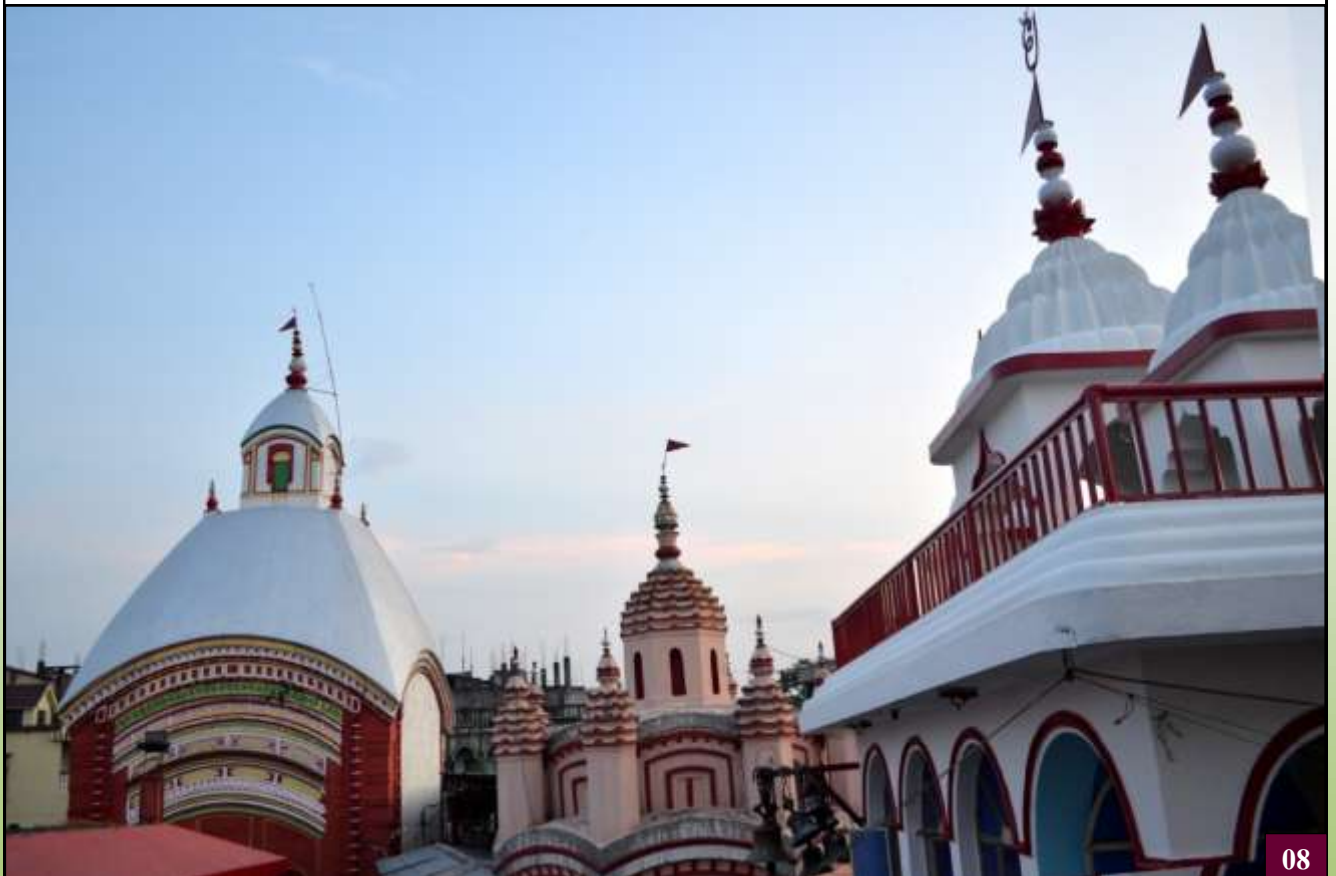
तारा पीठ को एक शक्ति पीठ के रूप में जाना जाता है। एक प्रसिद्ध कथा इस शक्तिपीठ से संबंधित है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ सती की तीसरी आंख का तारा गिरा था। सती के मृत शरीर को ले कर भगवान शिव जब अशांत भटक रहे थे तो विष्णु ने शिव को शांत करने के उद्देश्य से अपने चक्र से सती के मृत शरीर के खंडित कर दिया। फलतः सती के शरीर के विभिन्न अंग भारत उपमहाद्वीप के विभिन्न स्थानों पर गिर पड़े। शरीर के अंग जहाँ भी गिरे उन स्थानों पर विभिन्न रूपों में देवी की पूजा के केंद्र बन गए और शक्तिपीठ कहलाए। ऐसे 51 पवित्र शक्तिपीठ हैं। तारापीठ उनमें से एक है। माना जाता है कि यहाँ सती के शक्तिशाली तृतीय नेत्र का तारा गिरा था। इसलिये यह तारापीठ कहलाया और शक्ति, विनाश और क्रोध का प्रतीक माना गया। अतः इसे साधना के लिए शक्तिशाली स्थल माना गया है।

दूसरी कहानी यहाँ स्थापित देवी के मौलिक मूर्ति से संबन्धित है। ब्रह्मांड को बचाने के लिए महासागरों के मंथन से निकला हलाहल का पान शिव ने किया। जहर के प्रभाव से बचने के लिए शिव ने गरल को गले में धारण कर लिया। जिससे उनका गला नीला पड़ गया और इस कालकूट जहर को पीने से उन्हें गले में तीव्र जलन उत्पन्न हुई। तब तारा के रूप में सती ने जहर के प्रभाव से शिव को राहत देने के लिए अपना स्तनपान कराया। उन्होंने शिव को बालरूप में परिवर्तित कर, अपनी गोद में ले कर स्तनपान करवाया इससे शिव के गले की जलन शांत हुई। तारापीठ की मौलिक पाषाण प्रतिमा में यहीं रूप चित्रित किया गया है।

यह किंवदंती है कि लगभग 1200 साल पहले देवी माँ के स्थान की पहचान जय दत्त नाम के एक व्यापारी ने किया। जय दत्त अपने पुत्र और साथियों के साथ जल पथ से व्यापार कर लौट रहा था। खाने-पीने का सामान लेने के लिए उन्होंने नदी किनारे, देवी माँ के निवास स्थान पर नाव रोका। दुर्भाग्यवश वहाँ उसके पुत्र की सांप काटने से मृत्यु हो गई। उसके विलाप को सुनकर देवी ने नाव की खिड़की से जय दत्त से पूछा -” क्यों रो रहे हो? इस नाव में क्या हैं?”

पुत्र मृत्यु से शोकाकुल जय दत्त ने बेसुधी में कह दिया- नाव में भस्म भरा पड़ा है। तत्काल नाव का सारा सामान राख में बदल गया। इस दौरान एक अन्य चमत्कार भी हुआ। उसके साथी नाविकों ने भोजन के लिए पास के तालाब से शोल मछली पकड़ी। उन्होंने उसे काट कर धोने के लिए तालाब के जल में डुबाया। कटी हुई मछली अपने आप जुड़ कर जीवित हो कर तालाब में छलांग लगाकर भाग गई। नाविकों ने जय दत्त को यह अद्भुत घटना सुनाई। तब जय दत्त ने पुत्र के शव को उस तालाब में डाला। चमत्कारिक रूप से वह जीवित हो गया।

सब समझ गये कि इस स्थान पर अवश्य ही कोई आलौकिक शक्ति है। जय दत्त ने उस स्थान पर रह कर उस आलौकिक शक्ति को जानने का प्रण कर लिया। उसने अपने पुत्र सहित अन्य सभी को घर लौटा दिया अपने उसी स्थान



पर रहकर भक्तिभाव से उस आलौकिक शक्ति को ढूँढ़ने लगा। उसकी भक्ति और पागलपन देख भैरव शिव ने उन्हें दर्शन दिये और उस स्थान से सम्बन्धित समस्त गाथायें सुनाई और उन्हें देवी के मन्त्रों की दिक्षा दी। जय दत्त ने तालाब अर्थात् जिवित कुण्ड के किनारे देवी माँ का भव्य मन्दिर बनवाया और शिला मूर्ति को उस मन्दिर में स्थापित कर दैनिक पूजा का प्रबंध किया।

मान्यता है कि देवी शिला मूर्ति के रूप में सभी को दर्शन नहीं देना चाहती थी। अतः उन्होंने एक अन्य सौम्य रूप दर्शाया है। माँ ने कहा कि शिला मूर्ति को प्रतिदिन से आवरण से ढक दिया जाये। जय दत्त ने देवी माँ के बताये अनुसार मन्दिर का निर्माण करवाया। आज भी देवी माँ के बताये हुये क्रम और विधि के अनुसार पूजा आराधना और पशु बली होती है तथा देवी के निर्देशानुसार सौम्य रूप को राजवेश धारण कराया जाता है। माँ तारा के दर्शन के बाद मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है।

माँ को चढ़ावा या भोग के रूप में भक्तगण समान्यतः नारियल, पेड़ा, सिंदूर, अगरू, चन्दन, गुलाबजल, आलता, फल, चुनरी, कमल, कनेर, नीला अपराजिता, जवा पुष्प या गेंदे की माला, बेलपत्र, नीली या लाल साड़ियाँ चढ़ते हैं। देवी को रुद्राक्षा माला भी प्रिय है क्योंकि मान्यता है कि रुद्राक्ष भगवान रुद्र के नेत्र के अश्रु बिन्दु से निर्मित हुए है।

कच्ची हल्दी की माला और नींबू की माला भी देवी को प्रिय है। गर्भगृह के ठीक बाहर माँ तारा के युगल चरण द्रष्टव्य हैं जिस पर आलता डाला जाता है। तांत्रिक पद्धति के अनुसार कुछ भक्त आसव या मदिरा की बोतलें और अस्थि निर्मित माला का प्रयोग पूजा के लिए करते हैं। यहाँ बकरे की बलि भी दी जाती है। मछली, खीर, दही, शहद मिश्रित चावल, शोल मछली, खस्सी का मांस आदि भी देवी को प्रिय है।

बंगाल वामाचार, तंत्र साधना और शक्ति उपासना का प्राचीन केंद्र रहा है। तारापीठ में भी तंत्र साधना प्राचीन काल से प्रचलित है। श्मशान भूमि शक्ति उपासना का अभिन्न अंग माना जाता है तारापीठ में श्मशान भूमि शहर की सीमा के अंत में नदी किनारे पर स्थित है। इस श्मशान भूमि और मंदिर में बामाखेपा अवधूत ने एक भिक्षुक के रूप में साधना किया था। उन्होंने माँ तारा की पूजा करने के लिए अपने पूरा जीवन को समर्पित कर दिया था और अंततः उन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त किया था। उनका आश्रम भी मंदिर के करीब स्थित है। मंदिर परिसर में उनकी मूर्ति स्थापित है। अपने गुरु संत कैलाशपति के संरक्षण में बामाखेपा अवधूत ने योग का ज्ञान और अनेक तांत्रिक सिद्धियाँ प्राप्त की थीं।

तांत्रिक साधकों का मानना है कि माँ उग्र तारा का पसंदीदा स्थान श्मशान भूमि है। इसलिए बहुधा देवी तारा का मूर्तिरूप में चित्रण श्मशान भूमि के आस-पास किया जाता है। तारा, श्मशान भूमि, हड्डियों और कंकाल की ओर आकर्षित होती है, इस विश्वास के साथ तांत्रिक साधक यहाँ साधना करने के लिए आते हैं।

कई साधु स्थायी रूप से यहां रहते हैं। राख लिप्त साधु बरगद के पेड़ के नीचे या मिट्टी के झोपड़ियों में रहते हैं। उनकी झोपड़ियों के दीवार तारायंत्र, लाल सिंदूर आरक्त खोपड़ी से अलंकृत होती हैं। प्रवेश द्वार पर गेंदा की माला और खोपड़ी से सजी माँ तारा की आकृति, त्रिशूल और जलती हुई धुनी आम दृश्य है। वे मानव के साथ-साथ गीदड़ों, गिद्धों की खोपड़ी और साँप की केंचुली से भी झोपड़ियों को सजाते हैं। पूजा और तांत्रिक उद्देश्यों के लिए इन वस्तुओं का इस्तेमाल होता है।

इसके बाद हमलोग रात्रि के समय रामपुर हाट रेलवे स्टेशन वापस आ गए तथा वहां से ट्रेन पकड़कर मालदा पहुंच गए। माँ तारा सब पर अपनी कृपा बनाए रखे।

मानव जीवन की महत्ता एवं सार्थकता

84 लाख योनियों में भटकते हुए जीव को परमपिता परमेश्वर ने अपनी अहैतुकी कृपा प्रदान कर यह मानव शरीर दिया है। इस शरीर को पाकर जीव सुगमता से अपना कल्याण कर सकता है तथा भव बंधन से मुक्त हो मोक्ष पद की प्राप्ति कर सकता है। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है –

बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथ ही गावा ।

साधन, धाम, मोक्ष कर द्वारा, पाई न जेही परलोक संवारा।

सो परत्र दुख पावइ, सिर धुनी धुनी पछताए ।

काल ही, कर्म ही, ईश्वर ही मिथ्या दोष लगाए ॥

भगवान ने तो इसलिए यह मानव शरीर दिया कि जीव संसार बंधन से सदा के लिए छूट कर कृत्य कृत्य एवं सार्थक हो जाए। परंतु दुख इस बात का है कि मनुष्य अपने मार्ग (उद्देश्य) से विमुख होकर भोग तथा संग्रह में लग गया है तथा शरीर-संसार को अपना मान कर उस परमात्मा को भूल गया है जिसने उसे यह देव दुर्लभ शरीर दिया है। मनुष्य सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है और बल, बुद्धि तथा विवेक से परिपूर्ण है। यह शरीर संसार कभी किसी के साथ रहता नहीं, यह तो अनित्य मायिक एवं क्षणभंगुर है पर भगवान कभी किसी का साथ छोड़ते नहीं। मानव जीवन की सार्थकता इसे ईश्वर भक्ति में लगाना ही है। भक्ति मार्ग द्वारा ही मनुष्य भव बंधन से छूटकर परमात्मा के परमधाम को प्राप्त कर सकता है जो अन्य योनियों में संभव नहीं है। कहा गया है –

सुंदर मानुष देह की महिमा कहिए काही । / जाको चाहे देवता क्यों खोवत है ताही ।।

इस असार संसार में तेरा कोई नहीं है। किसी भी प्राणी अथवा पदार्थ से तेरा नित्य संबंध नहीं है क्योंकि तेरे साथ वह सदा रहने वाला नहीं है। चाहे वह कोई प्राणी हो या कोई पदार्थ। कर्म जनित सारे संबंध हैं जो कभी साथ देंगे ही नहीं। तुम केवल भगवान के हो और वही केवल तुम्हारे हैं। भगवान ने कभी तेरा साथ छोड़ा नहीं और ना कभी छोड़ेंगे। विश्वास कर परमात्मा से नाता जोड़ लो। उन्हें अपना बना लो। सदा सुख शांति एवं परम आनंद की वर्षा होती रहेगी। पर शरीर संसार से संबंध जोड़ना तो दुख अशांति तथा विपदाओं को निमंत्रित करना है। इस नश्वर संसार में जीवन- मरण, यश-अपयश, हानि-लाभ, संयोग-वियोग ही तो है यहां नित्य क्या है? संयोग वियोग में हर्ष विषाद तो लगा ही रहेगा।

ईश्वर ही सारी सृष्टि के रचयिता, पालन कर्ता एवं संहार कर्ता है। वे दीनबंधु है, भक्तों तथा शरणागत की रक्षा सदैव ही करते हैं। भगवान राम अजर-अमर, अखंडानंद, अनंत, नित्य, शाश्वत, सनातन, पूर्ण, एवं पुरुषोत्तम हैं। पूर्ण विश्वास के साथ जो उनकी शरण में चला जाता है उसे वे अपना बना लेते हैं और उसकी सारी चिंता उनकी हो जाती है। इस पर कहा है –

जिन्हें भरोसा राम का तिन्ही न व्यापे क्लेश।

राम सदा रक्षा करें, धरि धरि नित नव वेश।

बड़ो भरोसो राम का, बड़ी राम कि आस।

सदा सकल सब थल रहे, जो उर करि विश्वास।

एक भरोसो एक बल, एक आस विश्वास।

एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास।

अतः मनुष्य को चाहिए कि वह संसार की प्रापांचिक बाधाओं से अलग होकर निरंतर प्रभु स्मरण करते हुए जगत के सारे कार्य उन्हें ही समर्पित करें तथा अपने महत्वपूर्ण मानव जीवन को सार्थक बनाएं। -- गोपालजी तिवारी

अमरनाथ की यात्रा

मई 2010, एक दिन अचानक मेरे देवर ने बताया कि मेरे ऑफिस के कुछ लोग अमरनाथ की यात्रा पर जाने वाले हैं। मैं भी परिवार के साथ अमरनाथ जाना चाहता हूँ, क्या आप लोग भी हम लोगों के साथ चलेंगे। मैंने उनकी बातें सुनकर मन ही मन निर्णय कर लिया कि मैं भी अमरनाथ की यात्रा पर जाऊँगी। शाम को पति जब घर लौटे तो मैंने उनसे बात की और अमरनाथ जाने के लिए कहा।



भगवान शिव में उनकी भी श्रद्धा होने के कारण उन्होंने इसकी स्वीकृति दे दी और उन्होंने बताया कि कल जाने के लिए रिजर्वेशन भी करा लेंगे। दूसरे दिन उन्होंने मेरा और अपना रिजर्वेशन हावड़ा से जम्मू के लिए जम्मू तवी एक्सप्रेस में करा दिया।

इसी गाड़ी में साथ में जाने वाले अन्य 18 लोगों का भी रिजर्वेशन था। सभी लोग एक साथ जम्मू पहुंचने वाले थे। जाने में अभी डेढ़ महीना से अधिक समय था इसलिए हम लोग धीरे-धीरे वहां के विषय में जानकारी हासिल करने लगे और आवश्यक सामग्री भी जुटा कर रख लेना शुरू किए। जाने का दिन जैसे-जैसे नजदीक आता जा रहा था कुछ लोगों ने अपना रिजर्वेशन कोई न कोई कारण बता कर रद्द कर दिया।

अंततः टीम के 18 लोगों ने अपना जाना रोक दिया। अब बस हम ही दोनो जाने के लिए बचे थे। मेरा भी मन डांवाडोल हो रहा था लेकिन मेरे पति ने कहा कि मैं तो रेल में ही काम करता हूँ और अक्सर यात्राएं करनी ही पड़ती हैं चलो हम ही दोनों चलते हैं। प्रभु की इच्छा होगी तो हम लोग सकुशल उनका दर्शन करके लौट आएंगे। फिर भी मेरे मन में भय उत्पन्न हो रहा था कि हम लोग अकेले इतनी दूर की यात्रा कैसे करेंगे। लेकिन पति को थोड़ा भी डर नहीं था और यात्रा प्रारंभ करने के दिन हम लोग तैयार होकर के हावड़ा स्टेशन पहुंच गए।

हावड़ा स्टेशन से ट्रेन खुल चुकी थी और 2 रात 2 दिन यात्रा करके हम लोग जम्मू पहुंच गए। वहां जाते ही मोबाइल फोन बंद हो गया लेकिन हम लोगों ने परिवार वालों को इसकी सूचना एसटीडी बुथ के द्वारा दे दी कि अब जो 10 दिन का टूर है इसमें जरूरत होने से हम स्वयं संपर्क कर लेंगे। यद्यपि हमें पता नहीं था कि हमारा फोन पोस्टपेड होता तो बंद नहीं होता लेकिन प्रीपेड होने की वजह से फोन बंद हो चुका था।

जम्मू उतरने के बाद वहां अमरनाथ जाने वालों की लंबी भीड़ दिखाई दी। हमारे पति ने एक कुली से अमरनाथ के विषय में जानकारी प्राप्त की। उसने बताया कि अमरनाथ जाने के पहले हम लोगों को अपना पंजीकरण कराना होगा। हम लोग स्टेशन से निकलकर एक होटल में आए और होटल में सामान रखकर पंजीकरण कराने के लिए लाइन में खड़े हो गए। दो तीन घंटे में ही हमारा पंजीकरण हो गया और हमें वहां से दूसरे दिन पहलगाम जाने की अनुमति मिल गई।

सुबह सुबह हम लोग जम्मू से बस में बैठ कर पहलगांव पहुंचे। किंतु दिन ढल चुका था इसलिए हमें पहलगाम में रुकना था। पहलगाम में बहुत सारे टेंट लगे हुए थे जिनमें किराया देकर हम रह सकते थे। वहां कुछ निशुल्क खाने के लिए संस्थाओं ने भोजन की व्यवस्था की थी।

रात को हम लोगों ने पहलगांव में ही अपना समय बिताया। इस दौरान अमरनाथ जाने वाले 2-3 यात्रियों से परिचय हो गया। और दूसरे दिन सुबह में हम लोग सब साथ में चंदनबाड़ी जाने के लिए तैयार हुए। हावड़ा के मुकाबले वहां ठंड कुछ ज्यादा ही थी।

चंदन बाड़ी एक छोटी गाड़ी से पहुंचे। समय करीब 11 बज रहा होगा। वहां थोड़ा आराम करने बाद वहां से और वहां से आगे की चढ़ाई पिस्सूटाप पहाड़ पर चढ़ने की थी। थोड़ी दूर चलने के बाद मुझसे तो नहीं चला जा रहा था इसलिए मेरे पति ने मुझे घोड़े पर बिठा दिया और स्वयं पैदल चलने लगे।

मैं तो जल्दी शेषनाग पहुंच गई पर पति को आने में कुछ समय लगा। पर शाम होते होते वे भी शेषनाग पहुंच कर हम से मिल गए। शेषनाग में भी हम लोगों ने एक रात बिताई। रिमझिम बरसात होने की वजह से चारो तरफ कीचड़ हो गया था पर हम लोगो को उसकी परवाह नहीं थी। वहां भी टेंट लगे हुए थे। जमीन भले ही दलदल और पानी से भरा हुई थी फिर भी टेंट ठीकठाक था। आज की रात हमलोग वही टेंट में बिताया और सुबह होते होते वहां से आगे की यात्रा प्रारंभ की। मुझसे तो चला नहीं जा रहा था इसलिए वहां से हम दोनों घोड़े पर सवार होकर पंचतरणी के लिए प्रस्थान किए। तीन चार घंटे चलने के बाद हम लोग पंचतरणी पहुंच गए।

पंचतरणी में खाने पीने की मुफ्त व्यवस्था थी परंतु थके हुए होने के कारण कुछ भी खाया नहीं जा रहा था। किसी तरह खा करके हम लोगों ने वहां रात बिताई और दूसरे दिन सुबह बाबा अमरनाथ की यात्रा पर चल पड़े। पैदल ही चल रहे थे। सफेद बर्फ की चादर बिछी हुई थी। संभल संभल के चलना था। बाबा का नाम लेते हुए हम लोग उस दुर्गम रास्ते को पार कर गए और बाबा की शरण में पहुंच गए। पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं हुई फिर भी धीरे धीरे चल रहे थे। अंततः बाबा की कृपा से उनके दरबार में पहुंच गए।

बाबा के उस अद्भुत शिवलिंग का दर्शन किए। वहां अमर कबूतरों के भी दर्शन हुए। थोड़ी देर रुकने के उपरांत वहां से नीचे आना था और अब उतरने की बारी थी। पहुंचने में तीन दिन लगा है लेकिन लोगों ने बताया कि यदि बालटाल से उतरा जाए तो 5-6 घंटे में ही उतरा जा सकता है। मैंने पति से कहा कि क्यों ना हम लोग पैदल ही उतर जाएं और बालटाल पहुंचें। वह मान गए और हम दोनों पैदल ही वहां से पहाड़ों के रास्ते धीरे-धीरे उतरने लगे। बहुत सारे लोग उतर रहे थे इसलिए कुछ भी कठिनाई महसूस नहीं हो रही थी।

अंधेरा धीरे धीरे अपना पैर पसार रहा था लेकिन उसके पहले ही हम लोग बालटाल पहुंच गए। थोड़ी देर में अंधेरा होने वाला है इसलिए वहां से बस पकड़ कर हम और हमारे सह यात्री गुलमर्ग पहुंचे। वहां रात भर रुकने के बाद दूसरे दिन सुबह यात्रा प्रारंभ की और पुनः जम्मू आ गए।

वहां से हम लोग दूसरे दिन वैष्णो देवी माता के दरबार पहुंचे। सारी यात्रा हम लोगों ने पैदल ही तय की। फिर मैं भैरवनाथ के भी दर्शन करने गई और वहां से उसी दिन शाम को लौट कर जम्मू में रुक गए। हमारा रिजर्वेशन 2 दिन बाद का था इसलिए जम्मू में ही 2 दिन रुके और 2 दिन बाद जम्मू से ट्रेन पकड़कर हावड़ा पहुंच गए। हमारी पूरी यात्रा के दौरान लगभग 10 दिन समय लगा लेकिन यह मेरे जीवन की अद्भुत यात्रा थी जिसमें हर पल यह एहसास होता था इतनी दुर्गम चढ़ाई बिना प्रभु की कृपा के संभव नहीं है।

— सरस्वती देवी

जगन्नाथधाम की यात्रा

यह पिछले साल की बात है। गुवाहाटी पुरी एक्सप्रेस में आरक्षण पूरे परिवार के लिए मैंने करा लिया था। मालदा से 20 घंटे की यात्रा करते हुए हम पुरी धाम पहुंचे। सर्वप्रथम वहां पहुंचने के बाद एक होटल में ठहरने का प्रबंध किया। नहा धोकर पूजा पाठ के बाद दैनिक दिनचर्या के अनुसार कार्य प्रारंभ किया। मैंने एक पंडे यानी ब्राह्मण देव से बात की और श्री जगन्नाथ धाम की पूजा अर्चना एवं दर्शन के संबंध में बातचीत कर भली-भांति समझ लिया तथा पुरी धाम में दर्शन करने योग्य एवं घूमने लायक स्थानों की सूची तैयार की। दोपहर के खाने के बाद थोड़ा आराम किया और उसके बाद शाम 5:00 बजे के लगभग पुरी धाम में घूमने के लिए निकल पड़ा। पुरी धाम के कण-कण में ऐसा लगता है कि भगवान श्री जगन्नाथ समाए हुए हैं। घर घर में भगवान श्री जगन्नाथ जी का कीर्तन एवं पूजा पाठ की धुन सुनाई दे रही थी। शाम होते ही शंख तथा घंटी की आवाज चारों दिशाओं में गूंजने लगी। शाम के समय पूरा शहर रोशनी से जगमगा रहा था। उस दृश्य की छटा देखते ही बनती थी। शहर एवं बाजार में घूमते हुए समुद्र के किनारे पहुंचे। वहां पर समुद्र की अठखेलियां करती हुई लहरों का नजारा अत्यंत ही शोभनीय था।

उसके बाद हम लोग होटल में पहुंचकर रात का भोजन कर सो गए। सुबह जल्दी उठ कर नहा धोकर श्री जगन्नाथ मंदिर पहुंच गए तथा संबंधित पांडे की सहायता से भगवान जगन्नाथ देव जी का दर्शन किया और उनके दर्शन के बाद ऐसा लगा जैसे प्यासे मन को बारिश की बूंदों ने भिगो दिया।

पुरी के संबंध में किंवदंती यह है कि एक बार बलराम और श्री कृष्ण अपनी बहन सुभद्रा के साथ अपनी मौसी के घर उनसे मिलने गए थे। वहां जाकर पूरे शहर की छवि देख कर वह मोहित हो गए और दोनों भाई बहन के साथ वहां रहने के लिए एक धाम का निर्माण करने का फैसला कर लिया। फलस्वरूप उड़ीसा के राजा भगवान कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे, उसे सपने में अपने मन की भावना का एहसास कराया। राजा ऐसा सपना देख कर बहुत ही खुश हुआ, और सुबह होते ही अपने मंत्रियों को बुलाकर पुरी शहर में भगवान श्री कृष्ण का एक भव्य मंदिर बनवाने का निर्णय लिया। पूरे राज्य में घोषणा कर दी गई कि जो भगवान श्रीकृष्ण का मंदिर बनाकर राजा को प्रसन्न कर देगा उसे मुहमांगा इनाम दिया जाएगा।

राजा के समक्ष रखे गए एक नक्शे ने राजा के मन को मोहित कर दिया। राजा ने उस नक्शे को बनाने वाले को बुलाया और उसे पारितोषिक देना चाहा तो उस व्यक्ति ने कहा कि कार्य पूर्ण करने के बाद ही मैं अपना पारितोषिक स्वीकार करूंगा। तब उस व्यक्ति ने कहा कि हे राजन मैं मंदिर का मूल स्वरूप बनाने तक कोई पारितोषिक नहीं लूंगा। लेकिन भगवान जगन्नाथ को उनके भाई बलराम एवं बहन सुभद्रा की मूर्तियां बनाई जाएगी तो उस रात मुझे शांति चाहिए। यदि किसी ने मेरे कार्य में एक पल का भी विघ्न उत्पन्न किया तो मैं अपना कार्य वही बंद करके आपका पारितोषिक छोड़कर आपके इस पुरी धाम से चला जाऊंगा। यदि आपको मेरी यह शर्त मंजूर हो तो मैं अपना काम करूँ। यह बात सुनकर राजा भावुक हो उठे और बोले तुमने हमारे मन में जो शंका थी उसका समाधान कर दिया है। अतः आप यथाशीघ्र अपना कार्य प्रारंभ करें।

वास्तव में देव शिल्पी विश्वकर्मा भगवान श्री जगन्नाथ के भाई बहन की मूर्तियों का निर्माण कर रहे थे उनका पूरा शरीर तैयार कर दिया केवल हाथ की हथेली या नहीं बना पाए तभी राजा उस मंदिर में प्रवेश कर गए। विश्वकर्मा जी राजा को देखकर अपने वादे की याद दिला कर अपने धाम चले गए और जाते-जाते कहा कि ईश्वर की यही इच्छा थी इस कारण जगन्नाथ जी की मूर्ति में उनकी हथेलियां दिखाई नहीं पड़ती।

5 दिन तक पुरी धाम की यात्रा का आनंद उठाने के बाद पुनः ट्रेन के द्वारा पुरी से मालदा के लिए रवाना हो गया

चलो गढ़वाल

वर्ष 2000 ई में बड़े लड़के एवं 2003 में मेरे को छोटे लड़के का एडमिशन कक्षा 3 से ही मसूरी के बोर्डिंग स्कूल में हुआ अतः वर्ष में तीन चार बार बच्चों को लाने और पहुंचाने के लिए मेरे कार्यस्थल मालदा पश्चिम बंगाल से देहरादून मसूरी जाना और आना अनिवार्य था। लगातार यात्रा के क्रम में महान तीर्थ स्थल हरिद्वार एवं ऋषिकेश बार-बार जाता रहा परंतु उत्तराखंड के चारो धाम गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ धाम की यात्रा का कार्यक्रम नहीं बन पाया। कहते हैं कि तीर्थ स्थलों की यात्रा वहां इष्ट देवता यादवों की कृपा के बिना नहीं हो सकता है। बच्चों के स्कूल में छुट्टी के अभाव में दोनों लड़के तो नहीं जा सके परंतु मैं, मेरी पत्नी साथ में चारों धाम की यात्रा पर निकल गए। मैं मालदा पूर्व रेलवे में मुख्य नियंत्रक के पद पर कार्यरत हूं। मैं छोटे लड़के की छुट्टी समाप्त होने पर स्कूल में छोड़ते हुए हरिद्वार से चारों धाम की यात्रा के लिए रवाना हुआ। बड़ा लड़का बेंगलुरु में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था वह नहीं आ पाया।

मेरी मेरी यात्रा 9 दिनों की यात्रा थी। अतः मैंने व्यक्तिगत कार की तुलना में छोटी गाड़ी से जाना पसंद किया क्योंकि साथ में एक दो परिवार सहचर के रूप में मिल सके। दुर्गम यात्रा के समय एक दूसरे का साथ कभी काफी काम आता है साथ ही लगातार कई दिनों तक साथ रहने से अनजाने भी अपने बन जाते हैं। जो यात्रा के थकान और तनाव को दूर करने में सहायक होता है। हरिद्वार में हर की पौड़ी में मां पतित पावनी गंगा में स्नान कर सुबह-सुबह ही हम लोग समय पर बस पकड़ने चले गये। हरिद्वार वह स्थान है जहां गंगा पहली बार जमीन पर उतरती है। गोमुख से ऋषिकेश तक यह पहाड़ी रास्तों से गुजरती है। हरिद्वार में बस स्टैंड पर यात्रियों का रजिस्ट्रेशन हुआ। रास्ते के लिए कुछ फल बिस्किट, दवाइयां, आदि रख लिए। गर्म प्रदेश के वासी होने के कारण होने के कारण अप्रैल माह में भी ऋषिकेश में ठंड लगती प्रारंभ हो गई अतः साथ में काफी गर्म कपड़े ले लिए थे। लगभग 8:00 बजे बस हरिद्वार से देहरादून होते यमुनोत्री के लिए रवाना हुई। यह हम लोगों का पहला पड़ाव था। बस में चारों परिवार अपनी सीट पर अलग-अलग बैठे थे। आपस में परिचय भी तो नहीं था। हरे भरे खेतों से गुजरती गाड़ियां, दूर हिमालय की पर्वत श्रृंखला जिसे शिवालिक पहाड़ी कहा जाता था दिख रही थी। आसमान बादलों के साथ लुका छिपी का खेल खेलता सूरज का गोला हम लोगों के साथ ही दौड़ रहा था। नीले आसमान में उड़ते पक्षियों के समूह और यात्रा का उत्साह एक स्वप्निल वातावरण का निर्माण कर रहा था।

कांसरो नामक स्थान पर गाड़ियां एक रेखा के सामने रुकी। हम सब ने हल्का नाश्ता किया और चाय पी कर पुनः आगे की यात्रा में चल दिए। देहरादून में मैंने कुछ टॉफियां खरीद ली। पहाड़ी घुमावदार रास्ते प्रारंभ हुए। हमारी गाड़ी सर्पिले रास्ते होकर पहाड़ पर चढ़ने लगी। नीचे से ऊपर पहाड़ पर कई मंजिला रास्ते नजर आ रहे थे जिससे होकर दोनों तरफ गाड़ियां आ-जा रही थी और उस रास्ते से होकर हमें भी गुजारना था। ज्यादातर सहायात्री पहली बार पहाड़ पर आए थे। ऊंचाई पर ठंड अधिक बढ़ने के कारण हम सब ने गर्म कपड़े पहन लिए। मसूरी से कैप्टी फाल की तरफ हमलोग ऊंचाई से नीचे की तरफ आ रहे थे। कैप्टी फाल से लगभग 5 मिनट की यात्रा के बाद कई लोगों ने के सर चकराने लगे। कईयों को उल्टी आने लगी। हमारे कहने पर ड्राइवर ने गाड़ी सड़क के किनारे रोक दी। कई लोगों ने उल्टी की फिर मुंह धो कर पानी पिया। ड्राइवर ने बताया कि यह सामान्य घटना है। हवा का दबाव परिवर्तित होने से बहुत लोगों को ऐसी शिकायत होती है।

मेरी पत्नी मीनू ने पूरा डिब्बा हींग की गोली साथ में लिया था। हम सभी यात्रियों को स्वाद बदलने के लिए वो गोलियां दी। यह वह समय था जब हम सभी आपस में आपस में बातचीत प्रारंभ हुई। बस चली तो मैंने पहल करते हुए

एक एक कर सबसे परिचय पूछा। मेरे आगे मध्य प्रदेश के एक डाक्टर साहब, एवं उनके बड़े भाई अपनी अपनी पत्नी के साथ थे। मेरे बगल में ग्वालियर से एक रिटायर्ड फौजी अपनी पत्नी के साथ थे। मेरे पीछे चंदन चतुर्वेदी अपनी पत्नी एवं दो बच्चियों के साथ थे जो मध्यप्रदेश के जबलपुर में किसी कंपनी में प्रबंधक के पद पर काम करते थे। उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ से बिजली विभाग के रिटायर्ड कर्मचारी अपनी पत्नी के साथ थे मेरा परिचय वाला फार्मूला कारगर साबित हुआ और अब सभी आपस में बात कर रहे थे।

2:00 बजे के आसपास बस आकर एक छोटे मोटे होटल के सामने रूकी। वहां हमने खाना खाया। खाना स्वादिष्ट था। जमीन से लाई गई वस्तुएं पहाड़ों पर महंगी हो जाती है। बस स्टार्ट होते ही पुनः सबों ने मेरी पत्नी मीनू से हींगोली की मांग की। 9 दिनों की पूरी यात्रा में यह हींगोली सबसे अधिक लोकप्रिय और सबों को एक सूत्र में बांधे रखने के साथ-साथ लोगों के बीच मेरी पत्नी को अपनत्व और नेतृत्व का मौका दे गया। मेरी पत्नी मालदा में पूर्व रेलवे महिला मंडल महिला कल्याण संगठन में सचिव है तथा अनेक सामाजिक कार्यों में संलग्न रही है। हींगोली मात्र एक प्रतीक था जो उसकी नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित कर रहा था। पहले पड़ाव हनुमान चट्टी तक पहुंचते-पहुंचते अंधेरा घिर चुका था। यमुना ऊंचाई से नीचे की ओर चट्टानों से टकराती हुई गुजर रही थी। चारों ओर नदी के प्रवाह का तेज स्तर गूंज रहा था। इतनी अधिक ठंड लग रही थी कि हम सभी लगभग कांप रहे थे। हमारे ड्राइवर विक्रम सैनी ने बताया कि हमारा शरीर ठंड के लिए नहीं बना हुआ है इसलिए ठंड ज्यादा लग रही है। कल से ठंड लगने कम हो जाएगी जब सारा शरीर समायोजित हो जाएगा।

सुबह होते ही यमुनोत्री की सात किलोमीटर की पैदल चढ़ाई चढ़नी थी। हम सभी एक साथ निकल आए। लगभग एक कि.मी. चलने के बाद ही प्रतापगढ़ के वृद्ध पांडे जी की सांसे फूलने लगी। डाक्टर साहब ने उसे दवाई दी और उन्हें लौट जाने की सलाह दी। हम दो लोगों ने उन्हें होटल में उनके कमरे तक वापस पहुंचाया। उनकी पत्नी के साथ पैदल ही यमुनोत्री यात्रा पर निकल गई। धीरे-धीरे दिन निकलने लगा। बर्फ की चोटियां और उसके भी सूर्य की लालिमा एक अनोखा दृश्य उपस्थित कर रहा था। लगता था कि हम लोग इस भूलोक से इतर किसी अन्य लोक में विचरण कर रहे हैं। अत्यधिक चढ़ाई से हम सबों को परेशानी हो रही थी। चतुर्वेदी जी तो सपरिवार खच्चर पर चढ़ गए। डाक्टर परिवार की दोनों स्त्रियों को भी खच्चर पर चढ़ा दिया गया। मैं अपनी पत्नी का हाथ पकड़े धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। फौजी पवन सिंह में भी गजब की उर्जा थी। बादलों का झुंड विचरन करते हुए गुजर रहा था। ऐसा लग रहा था कि हम बादलों के ऊपर स्थित हैं। ऊंची चढ़ाई का अद्भुत दृश्यों में खोया हुआ था मैं पता नहीं कब होश आया। जब होश आया तो पत्नी ने स्नान करने को कहा। वही बगल में गर्म कुंड था जिसमें पुरुषों और स्त्रियों के अलग-अलग स्नानागार बने हुए थे। गर्म पानी से लगातार सफेद वाष्प निकल रहा था। यह भी अद्भुत था बर्फ के पहाड़ों के गर्म कुंड। चारों धाम में गर्म कुंड प्रकृति के द्वारा बनाए गए ताकि भीषण ठंड में भी श्रद्धालु स्नान कर सकें।

सभी लोगों ने गर्म कुंड में स्नान किया और यमुना देवी के मंदिर में पूजा अर्चना की। कहते हैं यमुना स्नान एवं पूजा से यम यानी मृत्यु का भय जाता रहता है। पूजा कर वहां का प्रसाद लिया। कहते हैं तीर्थों में पूजा अर्चना से भी अधिक पूण्य वहां का प्रसाद लोगों के बीच वितरित करने में है। अतः पूजा कर घर के लिए कुछ प्रसाद खरीदा। यमुनोत्री से हम लोग गंगोत्री फिर केदारनाथ बद्रीनाथ की यात्रा पर गए। आगे के अंकों में इन यात्राओं का विवरण प्रस्तुत करूंगा।

अरूण कुमार झा

मिठाई का खेल

क्या कहूं 6 अगस्त का हाल
अब भी कुछ-कुछ है ख्याल

वह सोमवार का दिन था
मौसम खुशक और शालीन था
रक्षाबंधन का था त्यौहार
मना रहा था पूरा संसार

मैं कपड़े ढीले-ढाले में
आ रहा था विक्रमशिला में
रुकी न गाड़ी रतनपुर में
आकर लगी जमालपुर में

प्लेटफार्म नंबर दो नजर आया
मैं बैग एंड बैगेज उतर आया
लगी प्यास थी खाया केरा
पानी पिया पोंछा चेहरा

कंधी निकाली संवारे बाल
अब भी कुछ-कुछ है ख्याल

पैसेंजर इंजन की आवाज फक फक
सुन लगा कलेजा करने धक धक
बैग हाथ में थामें आया
न आगे आया न पीछे आया

आया तो आया एक बोगी में आया
तब कहीं कुछ राहत पाया
पास बैठी थी लड़की कोई
अपनी धुन में खोई खोई

उसकी जो मुझ पर नजर पड़ी
हुई अचानक वह परी खड़ी

बोली भैया क्यों छोड़ गए थे
क्यों मुझसे रिश्ता तोड़ गए थे
सोचा कभी कैसी है बहना
छोड़ तुझे मुझे ना रहना

तभी कंधे पर एक बुजुर्ग नहीं रखा हाथ
बोले आओ बेटा बताऊं मैं पूरी बात
तुम्हारी शक्ल का हूबहू था इसका भ्रात
छोड़ गया था घर वालों का साथ

सोच बंधाने में राखी क्या हर्ज है
अरे यह तो हर मानव का फर्ज है
फिर मेरी रजामंदी पर वह फूली नहीं समायी
क्या हो कि मन-ही-मन झूला न झूल आई

झट उतरी टंकी से उसने लाई पानी
मेरे चेहरे को पहले की साफियानी
फिर दिया गोरोचन तिलक भाल
अब भी कुछ-कुछ है ख्याल

हैंडबैग से मिठाई निकाली
मेरे मुंह में दे ही डाली
फिर पांच दस चवन्नी अठन्नी सिक्का
धीरे धीरे मेरा दिमाग खिसका

तैरने लगा हवा में मन
करने लगा दिमाग सनसन
कानों में करती हू हू हवा
दिख रहे थे काशी काबा

अब उतर चुका था रतनपुर में
रख चुका था कदम भुवनपुर में

कसा फेंटा कमर कांधा
चलने को मैंने सबर बांधा
चल गए जब कुछ थोड़ी दूर
रास्ते में मिल गए दो हुजूर

बिरजू बाबू और सुरेंद्र भैया
देख कर मेरी डोलती नैया
जाहिर कर दी उसने शक
अब तो मेरी बोलती बंद

बोले क्या छोड़ आऊं घर तक
बोला नहीं मैं आ चुका डगर तक
आप न पड़िये इस झमेला
चला जाऊंगा मैं अब अकेला

आपको पकड़नी है गाड़ी फिलहाल
अब भी कुछ-कुछ है खयाल

डगमग डगर पर डगमगाता
देख किसी को उधर से आता
स्थिर मगर फैलाए बाहें
दीवारों की दिव्य निगाहें

देख रही थी हक्का-बक्का
टकराया उसी से खाकर धक्का
पकड़ के दर दीवारों को
कोरो को किनारो को

पकड़ा बांस-बत्ती का टट्टा
अब तो उसमें लट्टम लट्टा
फिर जैसे पकड़ा झिंगूर झट
दीवार किवाड़ एक साथ खट

मच गया वहां अजब का शोर
आ गए सब घर वाले दौड़

देख कर मेरा हाल बेहाल
अभी कुछ कुछ है खयाल

लेटी चारपाई पर लेडी डेजी थी
मेरे लिए दवा वही अंग्रेजी थी
उसे हटाया, मुझे लिटाया
चारपाई में अंतर ना आया

झलने लगी मांजी पंखा
मन में लिए अनेकों शंका
कोई तेल डाल रहा था
भींग मस्तक भाल रहा था

गई खबर फिर मामी आई
बुदबुदाई और झुंझलाई
छाती पीटी शोर मचाई
कैसी खेल दिखाई मिठाई

छितरी छतेर जैसे धान पुआल
अभी कुछ कुछ है खयाल



— उमेश कुमार मोदी

बसंत

आया बसंत मकरंद खुशी में
झूमे फूल की डाली डाली ।
सुंदर सपन सजा कर दिल में
करता रहा उनकी रखवाली ।

नित्य शाम आगोश में उनकी
चैन सुकून जो वह पाता है ।
अलग नहीं होता रात भर
उनके अंदर ही सो जाता है ।

असीम प्रीत की गाथा है यह
पुष्प जो प्रेम छिड़कते उन पर
मस्त मगन हो जाता मधुकर
पान पराग फूलों की कर कर ।

नित्य रात वह असीम प्रेम में
खो जाता अपना गम भूल कर
महक पराग की पाने की खातिर
सब कुछ दांव लगाता मधुकर ।

जख्म की परवाह उन्हें ना
जो पाया कांटा से बिंधकर
खत्म होती पल में चुभन सब
फूलों की प्रीत की डोर में बंधकर ।

देख पुष्प कभी उदासी
मन बहलाता वह गुंजन कर
सुमन उन्हें ले आलिंगन में
चुमते प्यार से जी भर भर

— विनय कुमार झा

होरी...

डालो रंग गुलाबी री
मुझे तुम संग प्रीत घनेरी
मन बांध लों प्रीत की डोरी
मुझे तुम संग प्रीत घनेरी ।

आया बसंत और उठा तरंग है
नव प्रेम की रंग लगाई
उड़े गुलाल स्नेह बरसाए
साथ में साजन मोरी री ।

यौवन का एहसास सताए
प्रियतम मेरे पास ना आए
हर पल मन व्याकुल हो जाए
देख कर चांद चकोरी री ।

चढ़ा फागुन उन्माद जगाए
रह रह कर तेरी याद जो आए
अपने ही रंग में रंग दो मुझको
पिचकारी से चोली री ।

— विनय कुमार झा



छाया चित्र

मालदा मंडल द्वारा आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी के दौरान विभागों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनियों की झलक



चित्र वीथिका

मालदा मंडल द्वारा प्रकाशित **डिस्कवरी बाइ ट्रेन-मालदा डिविजन** का विमोचन करते हुए वर्तमान एवं निवर्तमान मंडल रेल प्रबंधक ।

